कान्हा सब तम अब हर लीजो

कान्हा सब तम अब हर लीजो

कान्हा सब तम अब हर लीजो,
चहुँ दिसि ब्यापत घोर अँधेरा,
गोविन्द नया सबेरा कीजो,
कान्हा सब तम----------

सब अपने छूटे सपने टूटे,
हरि धाय हाथ धर लीजो,
कान्हा सब तम ----------

इक आश तुम्ही विश्वाश तुम्ही,
अब नव उमंग भर दीजो,
कान्हा सब तम ----------

बिचलित मन नहि सुमिरै कान्हा,
मोरे मन मंदिर घर कीजो,
कान्हा सब तम ----------

रचना आभार: ज्योति नारायण पाठक
वाराणसी

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/17477/title/kanha-sab-tam-ab-har-liyo

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |